

चलो मन ! श्री वृन्दाबन धाम ।

जहाँ विहरत नागरि अरु नागर, कुंजनि आठों याम ।

भूख लगे तो रसिकन जूठनि, खाइ लहिय विश्राम ।

प्यास लगे तो तरणि तनूजा, तट पिवु सलिल ललाम ।

नींद लगे तो जाइ सोइ रह, लतन-कुंज अभिराम ।

ब्रज की रेनु रेनु लखि चिन्मय, तन्मय रहु अविराम ।

पै 'कृपालु' मन ! जनि यह भूलिय, भाव रहे निष्काम ॥

भावार्थ-

हे मन ! तू दिव्य चिन्मय वृन्दाबन धाम में चल ।

जहाँ लाड़िली और लाल विविध कुंजों में आठों याम विहार किया करते हैं ।

यदि तुझे भूख लगे तो महापुरुषों की जूठन खाकर सुखी होना । जब प्यास लगे,

यमुना का निर्मल जल पी लिया करना । जब सोने की इच्छा हो तब स्वाभाविक

बने हुए लताओं के कुंज घरों में सो जाया करना । अरे मन ! ब्रज के प्रत्येक

कण-कण में चिन्मय स्वरूप देखते हुए सदा ही चिन्मय रहा करना । 'कृपालु'

कहते हैं कि हे मन ! किन्तु यह न भूलिया कि इन सब में तेरा भाव निष्काम ही

रहे ।